

हिंग्लिश का बढ़ता प्रभाव : हिंदी भाषा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

डॉ. जयप्रकाश गुप्ता

म. गा. हि. वि. वि. वर्धा, महाराष्ट्र; ईमेल: jay.kathar@gmail.com

डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल; ईमेल: arunkpandey2@gmail.com

Received– 27 June - 2026

Accepted-29 June- 2026

Published– 30 June 2026

Corresponding Author-

डॉ. जयप्रकाश गुप्ता

म. गा. हि. वि. वि. वर्धा, महाराष्ट्र; ईमेल:

jay.kathar@gmail.com

DOI-<https://doi.org/10.67275/SU.2026.041418>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



1. प्रस्तावना-

भाषा मानव जीवन के लिए संप्रेषण और परिवर्तनशील इकाई है, जो समाज के साथ हमेशा से विकसित होती रहती है। बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश में भाषाएँ भी नए रूप ग्रहण करती हैं। हिंग्लिश भाषा वर्तमान और डिजिटल संचार के दौर में भाषाओं के पारस्परिक संपर्क ने नए भाषिक रूपों को जन्म दिया है। हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रण से उत्पन्न एक मिश्रित भाषा ऐसा ही एक प्रमुख उदाहरण है। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंग्लिश के उदय, उसके सामाजिक-भाषिक कारणों तथा हिंदी भाषा के स्वरूप पर उसके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया कि हिंग्लिश का प्रसार मुख्यतः शहरीकरण, शिक्षा, मीडिया और सोशल मीडिया के कारण हुआ है। हिंदी भाषा के संदर्भ में “हिंग्लिश” का उदय इसी परिवर्तन का प्रतीक है। हिंग्लिश वह मिश्रित भाषिक रूप है, जिसमें हिंदी और अंग्रेजी के शब्द, वाक्य संरचना तथा अभिव्यक्ति का संयुक्त प्रयोग होता है। आज के युवाओं, मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इसका व्यापक उपयोग देखने को मिलता है।

2. सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य: भाषिक सम्मिश्रण -

भाषाविज्ञान में भाषाओं के मिश्रण को “कोड-परिवर्तन” और “कोड-मिश्रण” के रूप में समझा जाता है।

कोड-परिवर्तन: जब बात करते समय दो भाषाओं के बीच एक साथ परिवर्तन हो उसे कोड-परिवर्तन कहते हैं। जैसे-

मैं बाजार जा रहा हूँ। I will come back soon.

तुम तैयार हो। Let's go now.

कोड-मिश्रण: जब हम बोलते या लिखते समय अपनी भाषा में दूसरी भाषा के शब्द को जोड़ देते हैं, तो उसे कोड-मिश्रण कहते हैं। जैसे-

मैं आज ब्रेक फ़ास्ट नहीं करूँगा।

तुम स्कूल जा रहे हो।

हिंग्लिश मुख्यतः कोड-मिश्रण के उदाहरण जैसा ही है, जहाँ हिंदी वाक्यों में अंग्रेजी शब्दों का सहज समावेश दिखाई पड़ता है। जैसे- आज मीटिंग बहुत इंटेस्टिंग थी।

यह काम बहुत इजी है। यह प्रक्रिया स्वाभाविक है और सामाजिक संपर्क के कारण तेजी से विकसित हो रही है।

3. हिंग्लिश के उदय के कारण-

(क) वैश्वीकरण और शिक्षा- अंग्रेजी को वैश्विक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। उच्च शिक्षा, रोजगार और तकनीकी क्षेत्रों में अंग्रेजी का प्रभुत्व हिंग्लिश को बढ़ावा देता है।

(ख) मीडिया और विज्ञापन- टीवी, रेडियो, फिल्मों और विज्ञापनों में हिंग्लिश का बड़े पैमाने पर प्रयोग इसे लोकप्रिय बनाता है।

(ग) सोशल मीडिया और डिजिटल संस्कृति- WhatsApp, Facebook, Instagram जैसे प्लेटफॉर्म पर लोग तेजी से संवाद करते हैं, जहाँ भाषा सरल और मिश्रित हो जाती है।

(घ) युवा वर्ग की पहचान-आज के बदलते और बढ़ते परिवेश में युवा पीढ़ी हिंग्लिश को आधुनिकता, स्टाइल और पहचान के रूप में अपनाती है।

4. हिंदी भाषा पर हिंग्लिश का प्रभाव-

(क) सकारात्मक प्रभाव

- भाषा अधिक लचीली और गतिशील बनती है।
- नई शब्दावली का विकास होता है।
- वैश्विक संप्रेषण में सुविधा होती है।

(ख) नकारात्मक प्रभाव

- मानक हिंदी की शुद्धता में प्रतिदिन कमी आ रही है।
- व्याकरणिक संरचना पर प्रभाव पड़ रहा है।
- हिंदी शब्दों का प्रयोग आए दिन कम हो रहा है।

5. शिक्षण-परिवेश में हिंग्लिश एक अनुभव- एक अध्यापक के रूप में यह अनुभव किया गया है कि छात्र अक्सर हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण करके बोलते और लिखते हैं।

उदाहरण के लिए-

- सर, मैंने होमवर्क कम्प्लीट कर लिया है।
- सर, मैं रजिस्टर लेकर आता हूँ।
- सर, आज स्कूल आने में लेट हो गया।

यह प्रवृत्ति:

हिंदी के शुद्ध रूप के अभ्यास को कम करती है। लेकिन छात्रों के बोलचाल को सहज भी बनाती है। यदि शिक्षण में संतुलन रखा जाए, तो दोनों भाषाओं का समुचित विकास संभव है।

6. समाजभाषिक दृष्टिकोण-

- हिंग्लिश केवल भाषिक घटना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का अच्छा संकेत भी है।
- यह वर्ग, शिक्षा, शहरीकरण और तकनीकी विकास से जुड़ा हुआ है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ शुद्ध हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग अधिक है, वहीं शहरी क्षेत्रों में हिंग्लिश का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

7. भाषायी पहचान और सांस्कृतिक प्रश्न-

- हिंग्लिश के बढ़ते प्रभाव से यह प्रश्न उठता है कि क्या हिंदी अपनी मौलिक पहचान धीरे-धीरे खोती जा रही है?
- कुछ विद्वानों का मानना है कि हिंग्लिश कहीं न कहीं हिंदी के लिए खतरा है?
- जबकि अन्य इसे भाषा के विकास का स्वाभाविक चरण मानते हैं।

8. समाधान और संतुलन की आवश्यकता-

- शिक्षा में मानक हिंदी पर बल दिया जाए जिससे लोगों के अंदर हिंदी के कठिन शब्दों को भी बोलने में आसानी हो।
- संप्रेषण के दौरान व्यावहारिक संचार में लचीलापन अपनाया जाए।
- हिंदी शब्दावली को समृद्ध किया जाए जिससे उसके संवाद करने वालों में रूचि उत्पन्न हो।
- मीडिया में संतुलित भाषा का प्रयोग हो जिससे श्रोता को समझने में कोई कठिनाई का सामना न करना पड़े।

9. निष्कर्ष-हिंग्लिश की शुरुवात हिंदी भाषा के बदलते स्वरूप का प्रतीक है। इसको नहीं तो पुरे रूप से नकारा जा सकता है और न स्वीकार ही किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि इसे संतुलित दृष्टिकोण से समझा जाए जहाँ एक तरफ भाषा की शुद्धता और संरचना को बनाए रखा जाए, वहीं दूसरी ओर उसके स्वाभाविक विकास को भी आत्मसात करना गलत नहीं होगा। अंततः भाषा का

वास्तविक स्वरूप समाज के द्वारा किए गए प्रयोग से ही तय होता है, और हिंग्लिश उसी प्रक्रिया का एक नवीन रूप है। यह प्रवृत्ति जहाँ एक ओर भाषा को लचीला और आधुनिक बनाती है, वहीं दूसरी ओर मानक हिंदी की शुद्धता और संरचना के लिए चुनौती भी प्रस्तुत करती है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिंग्लिश हिंदी भाषा के विकास का एक स्वाभाविक चरण है, जिसे संतुलित दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची:

1. तिवारी, भोलानाथ. (2010). हिंदी भाषा का इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. मिश्र, विद्यानिवास. (2005). भारतीय भाषाएँ और उनकी संरचना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. Kachru, B. B. (1983). The Indianization of English. Oxford University Press.
4. Census of India. (2011). Language Data. Government of India.
5. Singh, R. (2015). Code-mixing in Indian languages. Journal of Sociolinguistics, 9(2), 120-135